रहस्यमयी साइबर मित्र

Author: Zac O'Yeah
Illustrator: Niloufer Wadia
Translator: Sadaf Jafar

PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

श्री, कटपाड़ी नाम के छोटे से नगर के एक घर में रहती है।

अम्मा एक ज़ेवर की दुकान में काम करती हैं। अप्पा एक टैक्सी चालक हैं। अम्मा-अप्पा चाहते हैं कि श्री कंप्यूटर के बारे में सीखे। उनको इस बात की ख़ुशी है कि उसे कंप्यूटर इस्तेमाल करना अच्छा लगता है।

श्री कंप्यूटर के लिए हमेशा समय निकाल ही लेती है। उसे कंप्यूटर से मेल भेजने के अलावा कई और चीज़ों की भी जानकारी है। वह इस पर स्कूल के प्रोजेक्ट भी बनाती है। उसमें कई तरह के खेल भी हैं और इन्टरनेट भी।

श्री के साथ उसकी बुआ भी रहतीं हैं। प्यार से सब उन्हें अक्का बुलाते हैं। वे ज़्यादातर टीवी पर अपनी पसंदीदा पुरानी फ़िल्में देखते हुए सो जाती हैं।

वे श्री को गरमागरम डोसे में चटपटे नूडल्स भरकर देतीं हैं। टिफ़िन ख़त्म कर, श्री को खेलना पसंद है। वे पुराने खेल नहीं जो अक्का को खेलना पसंद हैं, जैसे वो कौड़ी और पत्थर वाला खेल, बल्कि उसे कंप्यूटर पर खेल खेलना ज़्यादा पसंद है।

कंप्यूटर उसका दोस्त है। उसमें सोशल नेट्वर्किंग साइट जो है।

श्री दो महीने पहले अपनी तेरहवीं सालगिरह पर ऐसी एक साइट से जुड़ी थी। चाय-नाश्ता करने के बाद वो रोज़ अपने स्कूल के दोस्तों के साथ इस साइट पर चैट करती है। वे एक-दूसरे को बताते हैं कि स्कूल बस में मिलने के बाद से अभी तक उन्होंने क्या-क्या किया।

श्री बताती है कि उसने अपनी चाय में अतिरिक्त चीनी डलवाई है। एक दोस्त कहती है, “वो तो तुम रोज़ करती हो।”

श्री फिर कहती है कि, “मैंने मटन वाले स्वाद से नूडल्स भी डोसे के साथ खाए।”

दूसरी दोस्त छेड़ती है, “तुम खाने के अलावा कुछ और भी करती हो?”

श्री नाराज़ हो जाती है।
वो उनसे कंप्यूटर पर दोस्ती ख़त्म करने का
निर्णय करती है। फिर वो उन्हें याद भी करती है।

इससे पहले कि वह उनसे माफ़ी माँगे, उसे एक और
दोस्ती का निवेदन या फ्रैंड रिक्वेस्ट मिलता है।

ये किसी चैत्रा नाम की लड़की का है।
वो किसी अभिनेत्री की तरह सुन्दर है।

श्री दोस्ती के निवेदन को स्वीकार कर लेती है। एक क्लिक से अब वो मित्र बन जाते हैं।

चैत्रा लिखती है, “क्या तुम्हारे खूब सारे दोस्त हैं?”

“नहीं! और कुछ को तो मैंने आज ही खो दिया।” वो एक उदास चेहरे का इमोटिकॉन भेजती है।

“तो क्या हुआ? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपके कितने दोस्त हैं- आपकी दोस्ती किस तरह की है, ये मायने रखता है और अब तो मैं तुम्हारी दोस्त हूँ!”

श्री को यह सुनकर अच्छा लगता है।

“तुम्हारा स्कूल कहाँ है?” श्री लिखती है।

“तुम्हारे स्कूल के पास,” चैत्रा लिखती है।

“तुम्हें कैसे पता मैं किस स्कूल में जाती हूँ?” श्री सोच में पड़ जाती है।

“क्योंकि वह मेरे स्कूल के पास ही है!”

“ये तो अच्छा है। तब तो हम मिल भी सकते हैं।” श्री लिखती है।

“ये हुई न बात! अब हम हमेशा सबसे पक्की सहेलियाँ बनकर रहेंगी। बाय!” यह लिखकर चैत्रा साइन ऑफ़ करती है।

अगली सुबह, श्री अपने स्कूल के आस-पास
दूसरा स्कूल ढूँढ़ती है। मगर उसे कोई
स्कूल नहीं दिखता।
कितनी अजीब बात है कि उसने अगल-बगल किसी भी
और स्कूल के बारे में नहीं सुना था। मगर चैत्रा उसके बाकी दोस्तों से
कहीं अच्छी है। वो सिर्फ और सिर्फ श्री की ख़ास दोस्त है,
और किसी की भी नहीं।

आज वह गर्म नूडल्स को छूती तक नहीं है, हालाँकि वे उसका पसंदीदा स्वाद चिली चिकन वाले हैं।

अक्का को उसकी फिक्र होती है, “तुम्हारी तबियत तो ठीक है ना?”

“स्कूल का काम बहुत है,” वो झूठ बोल देती है।

“तो जाओ कर लो, मैं भी तब तक सुस्ता लेती हूँ,” उसकी बुआ कहती हैं।

मगर श्री आराम नहीं करती और ना ही वो होमवर्क करती है। उसकी जगह वह कंप्यूटर खोलकर ऑनलाइन आ जाती है, और अपनी नई सहेली के सन्देश का इंतज़ार करने लगती है।

जल्दी ही उसे चैत्रा का एक सन्देश मिलता है।

“हेल्लो दोस्त, कैसी हो?”

“मैं ठीक हूँ, मैंने टिफ़िन नहीं खाया,” श्री ने लिखा।

“क्यों?” चैत्रा ने पूछा।

“क्योंकि मैं तुमसे बात करना चाहती थी। इसलिए मैंने बस जल्दी से चाय ख़त्म कर ली,” श्री ने जवाब दिया।

“यह हुई न बात! क्या तुम मुझे अपनी एक सेल्फी भेज सकती हो?

मुझे अपना नम्बर दो ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ,” चैत्रा लिखती है। “मेरे पास कैमरे वाला फ़ोन नहीं है,” श्री ने दुखी होते हुए बताया।

चैत्रा ने श्री को अपना एक पुराना कैमरे वाला फ़ोन देने का प्रस्ताव रखा।

“हम रविवार को मिलते हैं। फिर मैं तुम्हारी तस्वीर भी ले लूँगी और साथ ही तुम्हें अपना पुराना फ़ोन भी दे दूँगी।”

श्री को हमेशा से कैमरे वाला फ़ोन चाहिए था। “हम कहाँ मिल सकते हैं?” उसने लिखा।

“कटपाड़ी जंक्शन रेलवे स्टेशन आ जाना,” चैत्रा ने टाइप किया।

“कितने बजे?” श्री ने पूछा।

“जब बेंगलुरु की गाड़ी स्टेशन पर पहुँचती है।” चैत्रा ने तय किया।

तभी अक्का कमरे में सफाई करने आईं।

“क्या कर रही हो, श्री?”

“मेरी एक नई दोस्त बनी है, अक्का!”

अक्का उसके कंधे के पीछे से चैत्रा की प्रोफाइल पिक देखती हैं।

“लेकिन ये तो मेरी पसंदीदा अभिनेत्री है, मधु। यह तुम्हारी दोस्त है?”

“हाँ, मगर इसका नाम तो चैत्रा है!”

अक्का ज़ोर-ज़ोर से हँसती हैं, “यह मधु हैं, मैंने इनकी सारी फिल्में देखी हैं। इनकी उम्र बहुत ज़्यादा होगी। ”

“यह मेरी उम्र की है,” श्री ज़ोर देकर कहती है।

“नहीं-नहीं यह मेरी उम्र की हैं,” अक्का कहती हैं।
यह तस्वीर तब की है जब वह स्कूल में पढ़ती थी,
यह तस्वीर उनकी पहली फ़िल्म से है।”

श्री अक्का से नाराज़ हो जाती है और फिर सोच में पड़ जाती है।

“चैत्रा ने क्या किसी और की तस्वीर लगायी है- किसी फिल्म अभिनेत्री की?”

“तुम कितने साल की हो?” उसने टाइप किया।

“मैंने कहा ना, मैं तेरह साल की हूँ बिलकुल तुम्हारे जितनी,” चैत्रा ने वापस टाइप किया।

“यह अच्छा है, पक्की सहेलियाँ एक ही उम्र की होनी चाहिए,” श्री ने जवाब दिया।
“इस प्रोफाइल पिक्चर में तुम्हारी बालियाँ कितनी सुन्दर लग रहीं हैं!” श्री ने कहा।

“शुक्रिया, मैंने इन्हें खुद बनाया है।”

“अरे वाह! रविकार को जब मिलने आओ तो इन्हें ज़रूर पहनना।”
“ठीक है, मगर एक शर्त पर, तुम अकेले ही आना,” चैत्रा ने कहा।

“क्यों?” श्री ने लिखा। “क्योंकि मैं भी अकेले ही आ रही हूँ, यह हमारी खूफिया भेंट होगी। है न!”

श्री 'ठीक है' लिखने ही जा रही थी कि उसे याद आया।
"सुनो चैत्रा, मैंने अपने स्कूल के आसपास कोई और स्कूल नहीं देखा।"
मगर चैत्रा तब तक ऑफलाइन जा चुकी थी।

"क्या इस नई सहेली में कुछ अजीब है?"
"क्या यह झूठ बोल रही है?"

श्री असमंजस में है और वो पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रही है।

“अक्का?” उसने पूछा।

“हाँ, मेरी गुड़िया,” अक्का ने कहा, “आखिर क्या परेशान कर रहा है तुम्हें?”

श्री ने तय किया कि अब वो अपनी झूठ बोलने वाली सहेली के बारे में सबकुछ सच-सच बता देगी।

“अक्का, अब मैं क्या करूँ?”

रविवार को, श्री और अक्का बेंगलुरु एक्सप्रेस के पहुँचने से काफी देर पहले ही कटपाड़ी जंक्शन पहुँच गए। नई दोस्त की सच्चाई का पता लगाने के लिए उनके पास एक खूफिया योजना है।

“मैं जाकर स्टेशन मास्टर से बात करती हूँ, ताकि समय पर वह हमारी मदद कर सकें,” अक्का ने कहा।

बेंगलुरु से आने वाली रेलगाड़ी स्टेशन में प्रवेश कर रही थी। श्री चारों ओर देखती है। उसे याद नहीं कि चैत्रा ने उसे स्टेशन के भीतर रुकने को कहा था या बाहर?

उधर अक्का न जाने कहाँ चली गयी थी।

वो कहीं दिख नहीं रहीं थीं।

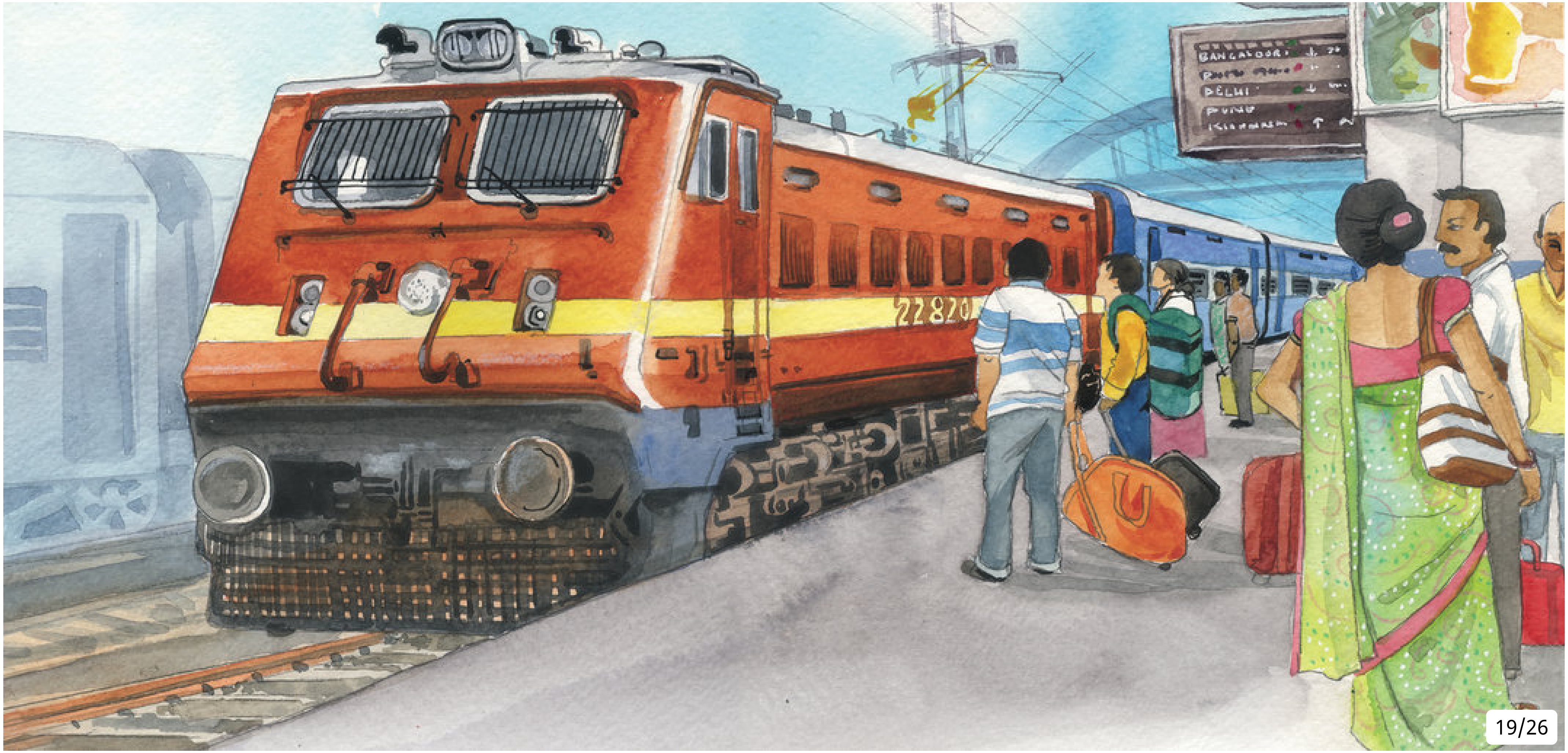

रेलगाड़ी से कई यात्री उतरने लगे। एक भी चैत्रा जैसी नहीं लग रही थी।

श्री के पिता की उम्र का एक व्यक्ति उसकी ओर आता दिखाई दिया।

वो मुस्कुरा रहा था। “हेल्लो, श्री!” श्री हैरानी से उसकी ओर देखती है। वो इस अधेड़ आदमी को जानती तक नहीं।

“तुम्हें देखकर ख़ुशी हुई!” वो कहता है।

“आप कौन... कौन हैं आप – आप चै... चैत्रा नहीं हैं!” श्री भय से हकलाई।

“नहीं, मैं चैत्रा नहीं हूँ, मैं तो हूँ दोस्त अंकल! मुझे छोटी लड़कियों से दोस्ती करना पसंद है। ही-ही,” चैत्रा-नहीं-बल्कि उस अंकल ने कहा।

“ईईईईईई!” श्री ज़ोर से चीखी। एक पल में अक्का स्टेशन मास्टर के साथ उसके पास आ पहुँची।

चैत्रा-नहीं-बल्कि-अंकल घबरा गए। उन्हें इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि श्री अपने साथ दो वयस्क व्यक्तियों को भी ले आएगी।

अक्का ने अपना झोला घुमाकर उसके मुँह पर दे मारा।

फिर ज़ोर से दहाड़ी, “खबरदार जो मेरी भतीजी के पास आने की कोशिश की तुमने!”

“आह!” वो चिल्लाया।

तभी रेलगाड़ी चल पड़ी। वह उसके दरवाज़े की ओर भागा। स्टेशन मास्टर उस आदमी को धर-दबोचने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ा। मगर वो यात्रियों के भीड़ में कहीं खो गया।

वे सब पुलिस थाने जाते हैं।

“आप दोनों बहादुर जोड़ी हैं!” महिला पुलिस अधिकारी ने कहा। “इस ढोंगी के बारे में जानकारी देने का शुक्रिया। श्री आपने अपने से बड़े से इस बारे में बात करके बहुत समझदारी का काम किया। क्या आप अपने विद्यालय में इस पोस्टर को लगा देंगी? हम, बहुत जल्दी आपके विद्यालय में साइबर सुरक्षा के विषय पर एक सत्र का आयोजन करना चाहेंगे।”

वे यह भी कहतीं हैं कि साइबर सेल के एक विशेषज्ञ द्वारा श्री के कंप्यूटर की जाँच करवानी ज़रूरी है।

अगले ही दिन, एक साइबर अपराध अधिकारी श्री के कंप्यूटर की पड़ताल करता है। कुछ ही घंटों के भीतर पुलिस उस आदमी को ढूँढ़ निकालती है जो चैत्रा बनकर धोखा दे रहा था।

वे बेंगलुरु में स्थित उसके दफ्तर में उसे जा दबोचते हैं और उन्हें ये जानकारी मिलती है कि वह सोशल मीडिया पर कई कम उम्र के लड़के-लड़कियों से दोस्ती करने की कोशिश करता रहा है।

श्री तय करती है कि अब वह सिर्फ अपने विद्यालय के बच्चों से ही दोस्ती करेगी। वह अपने दोस्तों को इस साइबर 'मित्र' वाले डरावने रोमांच के बारे में बताने को उतावली है।

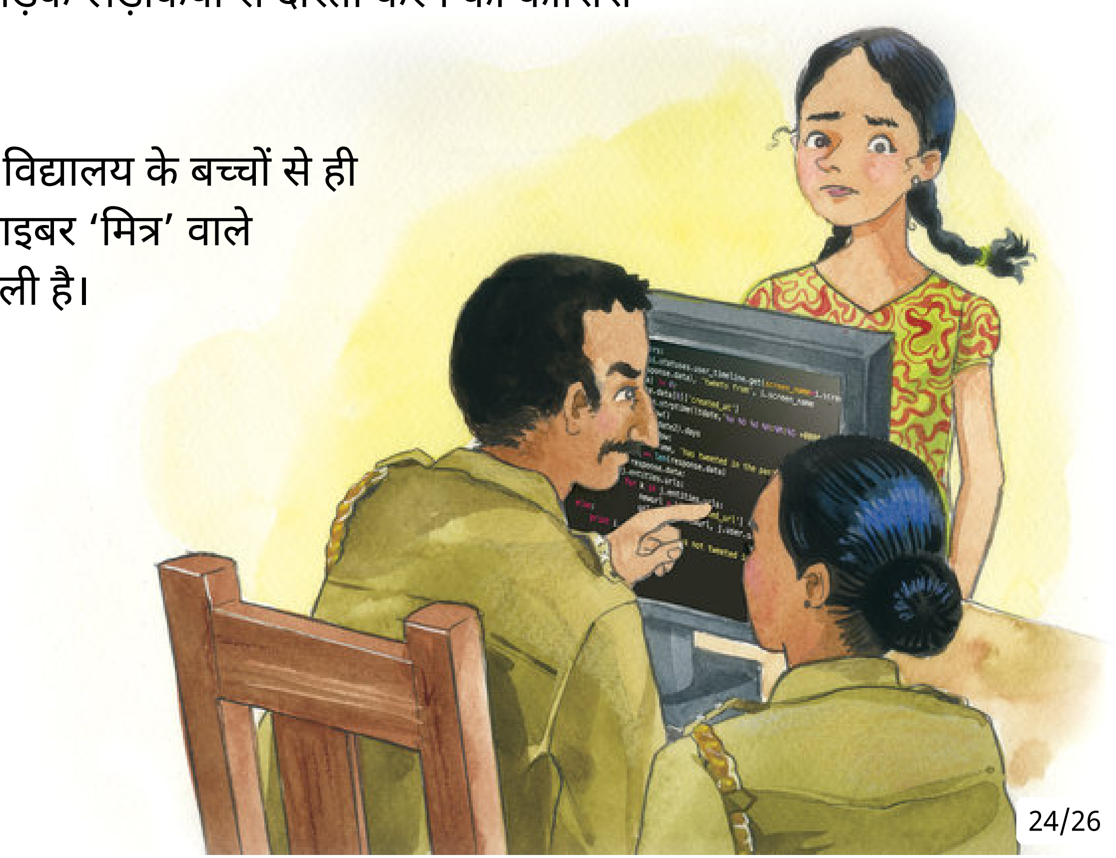

ऑनलाइन सुरक्षित रहिये!

भारत में बाल सुरक्षा टेलीफ़ोन नम्बर १०९८

इन्टरनेट के कई उपयोग हैं और यह एक अद्भुत तकनीक है। मगर इसके दुरुपयोग से कई मुश्किलें भी खड़ी हो सकती हैं, इन्टरनेट का प्रयोग सावधानी से करें।

किसी भी अनजान व्यक्ति को कभी भी अपना नाम, घर का पता, स्कूल का नाम, टेलीफोन नम्बर या ईमेल आईडी ऑनलाइन न दें।

अपने माता-पिता या अभिभावकों से पूछे बग़ैर किसी से भी अपनी निजी तस्वीरें साझा न करें।

उन संदेशों का जवाब कतई ना दें जो आपको असहज करते हैं।

किसी भी अनजान व्यक्ति से, जिसे आप सिर्फ इन्टरनेट के द्वारा जानते हैं, अपने माता-पिता या अभिभावक की जानकारी के बिना कभी भी प्रत्यक्ष रूप से मिलने की योजना ना बनाएँ। याद रखें कि हर इंसान असल में वैसा नहीं होता जैसा कि वह इन्टरनेट पर दिखाई पड़ता है।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: रहस्यमयी साइबर मित्र is translated by Sadaf Jafar . The © for this translation lies with Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'The Mystery of the Cyber Friend', by Zac O'Yeah . © Pratham Books , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Rahasyamayee Cyber Mitra' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by CISCO. www.prathambooks.org. Guest Editor for the original language: Mala Kumar

Images Attributions:

Cover page: Girl shaking hands with someone, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Meal time at home, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Girl eats happily while a woman watches TV, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: An upset girl looks at her computer , by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Photo of a woman in a phone, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Girl smiling looking at a computer, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Three school children walking down the road, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Scene inside a school bus, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Woman touches a girl's forehead to check for fever, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Girl looks worryingly at a woman sleeping on a sofa, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: Window and a clock, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Photo of two girls on the phone, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A worried girl and a happy woman in front of a computer, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Woman and a girl, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: A girl comes out of a computer towards another girl, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: A girl crying on her bed, looks back at her computer, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: The girl and a woman talking to each other, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A busy railway station scene, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Train arrives at a platform, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Porter carries luggage at a railway station, a lost girl looks around frantically, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Man talks to the girl at a railway station, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Woman hits a man with her handbag, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

CISCO. A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 23: Girl, woman and a lawyer talking to the police, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: Police members and a girl, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 25: Students looking at a board, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 26: Girl smiles and looks at a computer, by Niloufer Wadia © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

रहस्यमयी साइबर मित्र

(Hindi)

श्री को कंप्यूटर पर नई चीज़ें सीखना बेहद पसंद है। उसमें खेल है और उसमें है सोशल मीडिया साइट्स! इसी प्रकार की एक साइट पर बनी अपनी नई सहेली को लेकर वह बहुत उत्साहित है। पर यह सहेली उससे झूठ क्यों बोल रही है? इस रोमांचक साइबर कहानी को पढ़कर आप खुद ही जान लीजिए।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!